ISSN: 2583-5149 | Vol. 2, Issue. 2 |December 2022 | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन

मोहन सिंह,
शोध छात्र
डॉ० छविलाल सिंह
एसो० प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा

Received: 21 December 2022 | Accepted: 25 December 2022 | Published: 31 December 2022

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर के माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसके अंतर्गत आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का आंकलन करने के लिए उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु आर० के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्प्रत्यय प्रश्नावली तथा डॉ० राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध में शोधार्थी ने माध्यमिक-स्तर के 30 छात्र और 30 छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय एवं 30 छात्र और 30 छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन किया और यह पाया कि माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके साथ ही अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर काम किया गया है।

मुख्य बिन्दुः माध्यमिक स्तर, आत्म-सम्प्रत्यय, जिज्ञासा प्रवृत्ति।

प्रस्तावना

आत्म-संप्रत्यय व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए बनाई गई धारणा, राय या मत है जो वह अपने लिए खुद बनाता है । हरलॉक (1978) के अनुसार आत्म सम्प्रत्यय वे प्रतिमायें हैं जो व्यक्ति स्वयं अपने संबंध में रखते हैं। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के वे विश्वास होते हैं जो कि व्यक्ति अपनी शारीरिक मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के सम्बन्ध में रखता है। जिज्ञासा हमारे संज्ञान का एक मूल तत्व है, जिज्ञासा का मतलब जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुक होने से है। लेकिन इसके जैविक कार्य, तंत्र और तंत्रिका आधार को कम समझा जाता है। फिर भी

यह सीखने के लिए प्रेरक, निर्णय लेने में प्रभावशाली और स्वस्थ विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसके बारे में हमारी समझ को सीमित करने वाला एक कारक यह है कि जिज्ञासा क्या है और क्या नहीं है, इस पर व्यापक सहमति का अभाव है। एक अन्य कारक मानकीकृत प्रयोगशाला कार्यों की कमी है जो प्रयोगशाला में जिज्ञासा को नियंत्रित करते हैं। इन बाधाओं के बावजूद, हाल के वर्षों में तंत्रिका विज्ञान और जिज्ञासा के मनोविज्ञान दोनों में रुचि की एक बड़ी वृद्धि देखी गई है। इस परिप्रेक्ष्य में, हम इसके महत्व की सराहना करते हैं, इसकी वर्तमान स्थिति का एक चुनिंदा अवलोकन और उन कार्यों का वर्णन करते हैं जिनका उपयोग जिज्ञासा और सूचना-प्राप्ति का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन:

स्क्रिवनेर, सी० (2022) ने क्यूरिओसिटी: अ बिहेवियरल बायोलॉजी पर्सपेक्टिव पर अध्ययन किया और पाया अधिकांश शोधों में जिज्ञासा पर तंत्रिका तंत्र और ओटोजेनेटिक विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि जिज्ञासा के विकासवादी पहलुओं पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। शोध के परिणामानुसार छात्र प्रकृति पर जिज्ञासा को बढ़ावा दिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के कार्यों की पहचान करके, जिज्ञासा का एक अधिक मजबूत और सार्वभौमिक बनाया जा सकता है।

घोरई, एन०डी० एट अल (2021) ने लेवल ऑफ़ एजुकेशन एज एन इन्फ़्लुएन्शिअल फेक्टर ऑफ़ मोरल वैल्यू अमोंग स्टूडेंट्स ऑफ़ वेस्ट बंगाल के अध्ययन में सर्वे रिसर्च का इस्तेमाल किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच आत्म-सम्प्रत्यय पर शिक्षा का स्तर के प्रभाव को जानना था। कुछ अन्य स्वतंत्र चर जैसे स्ट्रीम शिक्षा, व्यवसाय और पिता की शिक्षा को भी अध्ययन में शामिल किया गया। इस शोध में 165 स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक की सहायता से प्रतिनिधियों का चयन किया गया। आत्म-सम्प्रत्यय छात्रों की संख्या को "स्कूली छात्रों के बीच आत्म-संप्रत्यय के लिए परीक्षण" की मदद से मापा गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि उच्च माध्यमिक (एचएस) स्तर और के बीच आत्म-सम्प्रत्यय स्नातकोत्तर (पीजी) स्तर के छात्र काफी भिन्न होते हैं। अन्य निष्कर्ष तद्नुसार निकाले गए हैं। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के नैतिक मूल्य/निर्णय स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के नैतिक मूल्य/निर्णय से भिन्न होते हैं।

अकिंसोला, आई०एफ० और ओलओसेबिकन, बी०ओ० (2021) के कंटेंट एडेक्वेसी ऑफ़ ओरल लिटरेचर इन सिलेक्टेड इंग्लिश स्टडीज टेक्स्टबुक्स: इम्प्लिकेशंस फॉर इनकल्केटिंग मोरल वैल्यूज इनटू इन स्कूल एडोलैसैंट्स पर अध्ययनुसार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकें आवश्यक संसाधन हैं। यह अध्ययन मौखिक साहित्य की सामग्री पर्याप्तता का विश्लेषण करने के लिए किया गया था। जूनियर के लिए न्यू ऑक्सफोर्ड सेकेंडरी इंग्लिश कोर्स में शामिल माध्यमिक विद्यालय और नई अवधारणाएं अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकें और शिक्षकों की जांच धारणा। मात्रात्मक डेटा के 50 शिक्षकों से स्व-निर्मित प्रश्नावली का उपयोग करके एकत्र किए गए थे। जिसमें 25 जूनियर सेकेंडरी स्कूलों में यादृच्छिक रूप से अंग्रेजी अध्ययन का चयन किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तक की सामग्री इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। अन्य कारकों के रूप

में इन-स्कूल किशोरों में नैतिक पतन देखा गया। हालांकि अध्ययन में चित्रित मौखिक साहित्य सामग्री के शिक्षक कार्यान्वयन के स्तर का पता नहीं लगाया गया था। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए कार्यक्रम के लिए पाठ्यपुस्तकें और एक अच्छी तरह से लिखी गई पाठ्यपुस्तक लागू नहीं होगी। इसलिए, इन-स्कूल किशोरों में देखी गई नैतिक गिरावट का कारण अंग्रेजी अध्ययन पाठ्यपुस्तकों की मौखिक साहित्य सामग्री का खराब होना है।

दुराकू, जेड. एच. एंड होक्स्हा, एल. (2018). सेल्फ-एस्टीम, स्टडी स्किल्स, सेल्फ-कॉन्सेप्ट, सोशल सपोर्ट, साइकोलॉजिकल डिस्ट्रेस, एंड कोपिंग मैकेनिज्म इफेक्ट्स ऑन टेस्ट एंग्जायटी एंड अकेडमिक परफॉरमेंस, इस लेख का उद्देश्य विश्वविद्यालय कौशल और उच्च विद्यालय के छात्रों के बीच अध्ययन कौशल, आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान और मनोवैज्ञानिक संकट के साथ परीक्षण चिंता और अकादमिक प्रदर्शन के संघ का आकलन करना है। कॉलेज और सामाजिक समर्थन में होने के कारण परीक्षण चिंता के लिए सुरक्षात्मक कारक थे। बेहतर अध्ययन कौशल, आत्म-अवधारणा और मनोवैज्ञानिक संकट उच्च परीक्षण चिंता का संकेत थे। अंजुम, एस. (2019). उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय, नैतिक निर्णय और धर्म निरपेक्ष अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि धर्म के आधार पर देखा जाए तो शिक्षार्थियों पर एक ही स्थान पर अध्ययन के बावजूद आत्म सम्प्रत्यय, नैतिक निर्णय की भावना तथा धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया है। केवल हिन्दू धर्म एवं ईसाई धर्म के विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जिराउत, जे० एवं जुम्बरन, एस० (2018) ने क्यूरिओसिटी इन स्कूल्स पर अध्ययन किया और पाया कि जिज्ञासा को समझने के लिए अनुसंधान अधिक अंतःविषय होता जा रहा है, जैसा कि इस पुस्तक में दिखाया गया है, शिक्षा, मनोविज्ञान, मानव-कंप्यूटर में शोधकर्ताओं से आने वाले नए ज्ञान के साथ बातचीत, रोबोटिक्स, तंत्रिका विज्ञान, चिकित्सा, आदि। यह एक अविश्वसनीय अवसर प्रदान करता है, जो कि सीखा है उसका उपयोग जिज्ञासा को बढ़ावा देकर शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए ही करें। क्योंकि जिज्ञासा को बढ़ावा देना असंगत भी हो सकता है। इसलिए वर्तमान शैक्षिक प्राथमिकताएं, भविष्य के अनुसंधान का लक्ष्य उस महत्व को प्रदर्शित करना चाहिए जो शिक्षार्थियों के विकास में आज की मांग के अनुसार नवाचार की आवश्यकता को निभाता है।

मेंदो-लाजरो, एस. एट.अल. (2017). सेल्फ-कॉन्सेप्ट इन चाइल्डहुडः द रोल ऑफ बॉडी इमेज एंड स्पोर्ट प्रक्टिस, अध्ययन का उद्देश्य बच्चों के लिंग और शरीर की छवि के साथ संतुष्टि में अंतर का पता लगाना था जो इस बात पर निर्भर करता है कि विषय प्रथाओं ने खेल का आयोजन किया या नहीं। इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य बचपन में आत्म-अवधारणा के शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक, पारिवारिक और भौतिक आयामों के निर्माण की प्रक्रिया पर शरीर की छवि की भूमिका और संगठित खेल के अभ्यास की जांच करना है। ऐसा करने के लिए, 944 विद्यार्थियों के न्यादर्श का उपयोग किया गया था। ये बच्चे स्वायत्त समुदाय के चरमपंथ (स्पेन) के विभिन्न केंद्रों में प्राथमिक विद्यालय में भाग ले रहे थे और उनकी आयु 9 से 12 वर्ष के बीच थी। अध्ययन के

मुख्य परिणाम बताते हैं कि इस अध्ययन में भाग लेने वाले प्रत्येक चार बच्चों में से तीन अपने शरीर की छवि के साथ संतुष्ट नहीं थे और प्रत्येक पांच में से एक बहुत ही असंतुष्ट था। शरीर की छवि के साथ संतुष्टि या असंतोष लड़कों और लड़कियों में समान था, हालांकि यह सराहना की जा सकती है कि आदर्श शरीर की छवि आंशिक रूप से लिंग रूढ़ियों द्वारा वातानुकूलित है। बच्चों में शरीर की छवि के साथ सबसे अधिक शैक्षणिक और शारीरिक आत्म-अवधारणा थी। संगठित खेलों का अभ्यास करने वाले बच्चों में अधिक शारीरिक और भावनात्मक आत्म-अवधारणा थी। बच्चे अपने शरीर की छवि के साथ सबसे अधिक असंतोष का प्रसार करते हैं और संगठित खेलों का अभ्यास करते हैं, जिसमें परिवार की आत्म-अवधारणा कम होती है।

पालोमिनो, एम.डी.सी.पी. (2017). एन एनालिसिस ऑफ सेल्फ-कॉन्सेप्ट इन स्टूडेंट्स विध कोम्पेंसेंटरी एजुकेशन नीड्स फॉर डेवलपिंग अ माइंडफुलनेस्स-बेस्ड साइकोएजुकेशनल प्रोग्राम, पर अध्ययन किया और पाया कि शिक्षा को विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों में संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे प्रत्येक छात्र खुद को देखता है। जैसे, माइंडफुलनेस एक सीखने का अनुभव है जो इस अभ्यास में संलग्न लोगों के लिए महत्वपूर्ण भावनात्मक कल्याण, सीखने और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों को पूरा करता है। अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय स्तर पर प्रतिपूरक शिक्षा की आवश्यकता वाले 26 छात्रों में आत्म-अवधारणा की धारणाओं का विश्लेषण किया गया, यह वर्णनात्मक-सहसंबंधी अध्ययन ‘‘बहुआयामी स्व-संकल्पना पैमाने’’ के माध्यम से आयोजित किया गया था। उत्तरदाताओं ने सह-संबंध, शारीरिक उपस्थिति और शारीरिक क्षमता और गणित में अकादमिक आत्म-अवधारणा के सकारात्मक स्तरों की सूचना दी। इसके अलावा, पैमाने के विभिन्न कारकों के बीच सहसंबंध पाया गया, इस प्रकार बाद के डिजाइन और एक माइंडफुलनेस हस्तक्षेप के कार्यान्वयन के पक्ष में थे। मेहरद,ए. (2016). मिनी लिटरेचर रिव्यु ऑफ सेल्फ-कांसेप्ट. फैकल्टी ऑफ साइकोलॉजी युनीवर्सीटेट औटोनोमा डी बर्सलोना, इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों की आत्म-अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करना था। वर्तमान अध्ययन के परिणामों से पता चलता है कि आत्म-अवधारणा प्रत्येक के लिए एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में ग्रहण की गई है और व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन के प्रति उसके विश्वास, दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया को बदल सकती है। इसी तरह इस अध्ययन ने आत्म-अवधारणा की शुरुआत, इस महत्वपूर्ण कारक के प्रति विभिन्न विचार, आत्मनिरीक्षण की भूमिका और बहुसांस्कृतिक की व्याख्या की। इसके अलावा, इस शोध पत्र ने स्व-अवधारणा की अनिवार्यता का समर्थन किया इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत अग्रिम में इसकी एक आवश्यक भूमिका बताई।

पलासिओस, ई.जी. एट.अल. (2015). पर्सनल सेल्फ-कांसेप्ट एंड सेटिसफेक्सन विध लाइफ इन एडोलैसैंट्स, यूथ एंड एडल्टहुड, इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत आत्म-अवधारणा और जीवन के साथ संतुष्टि के बीच संबंधों का पता लगाना था, बाद में व्यक्तिगत समायोजन के लिए महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में। अध्ययन एक संरचनात्मक मॉडल का परीक्षण करता है जो आत्म-अवधारणा के चार आयामों, स्व-पूर्ण, स्वायत्तता, ईमानदारी और भावनाओं को शामिल करता है।

अध्ययन में 801 प्रतिभागियों, जिनमें से सभी 15 और 65 (एम = 34.03, एसडी = 17.29) के बीच आयु वर्ग के थे, ने लाइफ स्केल (एसडब्ल्यूएलएस) और व्यक्तिगत स्व-संकल्पना (एपीई) प्रश्नावली के साथ संतुष्टि को पूरा किया। परिणामतः व्यक्तिगत आत्म-अवधारणा के चार आयाम उनके वजन में भिन्न होते हैं, परिणाम बताते हैं कि, जीवन के साथ संतुष्टि में 46% पायी गयी है। निष्कर्षतः इस मनोवैज्ञानिक संकट या कुप्रथा को रोकने में मदद करने के लिए, माध्यमिक शिक्षा के दौरान, जल्दी से निपटा जाना चाहिए।

ल्युकस्ज़, डी०के० अट अल (2014) ने सब्जेक्टिव वेल-बीइंग एज अ मीडिएटर फॉर क्यूरिओसिटी एंड डिप्रेशन पर अध्ययनुसार उस भलाई ने जिज्ञासा और अवसाद के बीच संबंध की मध्यस्थता की। अवसाद के साथ एक वैकल्पिक मॉडल के रूप में परिणाम के रूप में मध्यस्थ और व्यक्तिपरक कल्याण केवल आंशिक मध्यस्थता का संकेत दिया। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि जिज्ञासा नकारात्मक हो सकती है, जो ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति का विरोध करती है।
जिरोउत, जे० एंड क्लाहर, डी० (2012) ने चिल्ड्रेन्स साइंटिफिक क्यूरिओसिटी: इन सर्च ऑफ़ एन ऑपरेशनल डेफिनेशन ऑफ़ अन एलुसिव कांसेप्ट पर अध्ययन किया और पाया कि जिज्ञासा बच्चों के संज्ञानात्मक विकास का एक निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण पहलू है, अधिकांशतः जिज्ञासा को मापने के शोध ने वयस्कों पर ध्यान केंद्रित किया है, और मुख्य रूप छोटे बच्चों के लिए से प्रश्नावली को नियोजित किया जाता है- इस प्रकार के उपाय जो छोटे बच्चों के साथ प्रयोग के लिए अनुपयुक्त हैं। एक व्यापक साहित्य का कम बच्चों की जिज्ञासा पर विभिन्न उपायों की एक विस्तृत विविधता का उपयोग किया गया है जो आमतौर पर स्पष्ट नहीं हैं।
प्लक, जी० (2011) स्टीमुलेटिंग क्यूरिओसिटी तो एन्हांस लर्निंग पर अध्ययन कर पाया कि शिक्षण को निर्देशित करने के लिए जिज्ञासा के मनोविज्ञान से प्राप्त निष्कर्षों को लाभकारी रूप से नियोजित किया जा सकता है। छात्रों को जानकारी प्राप्त करने के लिए एवं छात्रों को प्रेरित करने के लिए शिक्षा के विभिन्न संदर्भ विशेष रूप से, प्रश्न आधारित शिक्षण उपागम जैसे समस्या आधारित अधिगम संगत प्रतीत होते हैं। छात्रों की जिज्ञासा की प्रभावी उत्तेजना के संबंध में सिद्धांत और साक्ष्य। स्विचिंग प्रतिमान, सरल तकनीक जैसे नियमित प्रतिक्रिया और आकलन प्रदान करने से वर्तमान में छात्रों के ज्ञान की स्थिति बढ़ी हुई है जो कि जिज्ञासा के माध्यम से सीखने को बढ़ाने में शिक्षकों की सहायता कर सकती है।

शोध का शैक्षिक महत्व

आत्म-सम्प्रत्यय बालकों में शिक्षा के माध्यम से विकसित किये जा सकते है। ये आत्म-सम्प्रत्यय ही बालक के विकास को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते है। ये बालक की जीवन की रूपरेखा को ही परिवर्तित कर देते है। जीवन की सफलता का आधार शिक्षा में ही निहित रहता है। और आत्म-संप्रत्यय को विकसित करने का सबसे प्रभावशाली केन्द्र विद्यालय को ही माना जाता है। अतः आत्म-सम्प्रत्यय सम्पूर्ण शिक्षा की नींव होते है। यह एक या दो प्रयासों या कोई सैद्धांतिक चर्चा करने से नहीं आते और न ही यह केवल शिक्षा में नैतिक पक्ष को शामिल कर बालकों को कक्षा-कक्ष में नैतिक शिक्षा पढ़ाने से आते हैं वरन् यह तो जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से प्रारम्भ किये

गए प्रयासों के जीवन की निरन्तरता में शामिल घटनाओं व अनुभवों के सहयोग देने से प्रारम्भिक अवस्था पर प्रदान की गई शिक्षा से आते हैं। इस अध्ययन में जिज्ञासा का मतलब जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुक होने से है। यदि विद्यार्थी में ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुकता होगी तो वह अवश्य ही ज्ञान प्राप्त कर लेगा जिससे उसके स्वयं के साथ-साथ देश का भी विकास होगा।

शोध के उद्देश्य:

शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थेः

1. माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म-सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाऐं:

H.1. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं होता है।

H.2. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध की विधि एवं प्रक्रिया:

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिये सर्वेक्षण शोध विधि अपनायी गयी है। जिसमें उच्च प्राथमिक स्तर के माध्यमिक-स्तर के 30 छात्र और 30 छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय एवं 30 छात्र और 30 छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

उपकरण:

इस शोध के अंतर्गत आत्म सम्प्रत्यय का आंकलन करने के लिए आर० के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्प्रत्यय प्रश्नावली तथा डॉ० राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है ।

सांख्यिकीय प्रविधि:

इस शोध में मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया है

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण: प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर की गयी है-

1-माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन - उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आर० के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्प्रत्यय प्रश्नावली तथा डॉ० राजीव

कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान तथा मानक विचलन को निम्न तालिका संख्या-1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1: माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति से सम्बन्धित विभिन्न सांख्यिकीय मान-

चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन(S.D.)
आत्म-संप्रत्यय	60	166.5	21.6
जिज्ञासा प्रवृत्ति	60	73.4	15.45

तालिका में वर्णित प्राप्तांकों से स्पष्ट है कि प्राप्त आकड़ों में माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय का एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किया गया। आत्म-संप्रत्यय के लिए मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 166.5 एवं 21.6 प्राप्त हुआ तथा जिज्ञासा प्रवृत्ति के लिए मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 73.4 एवं 15.45 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों में आत्म-संप्रत्यय का स्तर उच्च होता है, तथा जिज्ञासा की प्रवृति सामान्य स्तर की होती है।

2. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म-सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना- माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए आर० के० सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्प्रत्यय प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को अधोलिखित तालिका संख्या -2 में दर्शाया गया है।

तालिका 2: माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय से सम्बंधित प्रदत्तों के विभिन्न सांख्यिकीय मान -

वर्ग	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-परीक्षण का मान (t)	सार्थकता स्तर
छात्र	30	169.81	20.65	2.36	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
छात्रा	30	158.42	22.17		

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय से सम्बंधित मध्यमान क्रमशः 169.81 एवं 158.42 और मानक विचलन 20.65 एवं 22.17 पाए गए। मध्यमानों से स्पष्ट है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं में उच्च स्तरीय आत्म-सम्प्रत्यय होते हैं। यद्यपि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय से सम्बंधित टी-परीक्षण का मान 2.36 पाया गया, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक पाया गया, यह दर्शाता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-

छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना H॰1 स्वीकृत की जाती है। मध्यमानों में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह केवल संयोगवश है।

3. माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना- माध्यमिक-स्तर के विद्यार्थियों की जिज्ञासा प्रवृत्ति के अध्ययन हेतु डॉ॰ राजीव कुमार द्वारा निर्मित जिज्ञासा प्रवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात तालिका संख्या-3 में दर्शाया गया है।

तालिका 3: माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति से सम्बंधित प्रदत्तों के विभिन्न सांख्यिकीय मान -

वर्ग	**न्यादर्श (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**टी-परीक्षण का मान (t)**	**सार्थकता स्तर**
छात्र	30	72.5	17.26	2.42	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
छात्रा	30	77.86	15.51		

तालिका में वर्णित प्राप्तांकों से स्पष्ट है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र और छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति से सम्बंधित मध्यमान क्रमशः 72.5 एवं 77.86 और मानक विचलन 17.26 एवं 15.51 पाए गए। मध्यमानों से स्पष्ट है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं में सामान्य स्तरीय जिज्ञासा प्रवृत्ति होती हैं। यद्यपि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के जिज्ञासा प्रवृत्ति से सम्बंधित टी-परीक्षण का मान 2.42 पाया गया, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक पाया गया, यह दर्शाता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना H॰2 स्वीकृत की जाती है। मध्यमानों में जो मान दृष्टिगोचर है, वह मात्र संयोगवश है।

निष्कर्ष

इस शोध में शोधार्थी ने माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं पर अध्ययन किया और यह पाया कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं में उच्च स्तरीय आत्म-सम्प्रत्यय होते हैं। यद्यपि माध्यमिक-स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय से सम्बंधित तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं के आत्म-संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति से सम्बंधित अध्ययन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं में सामान्य स्तरीय जिज्ञासा प्रवृत्ति होती हैं। यद्यपि माध्यमिक-स्तर के छात्र एवं छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। मध्यमानों में जो अंतर दृष्टिगोचर हो रहा है, वह केवल संयोगवश है। माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं में समान्य स्तर की जिज्ञासा प्रवृत्ति का पाया जाना यह दर्शाता है कि माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं को प्रदान की

जाने वाली शैक्षिक सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता है जिससे इस क्षेत्र के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा को बढाया जा सकेगा जैसे-जैसे माध्यमिक-स्तर के छात्र-छात्राओं जिज्ञासा की प्रवृति बढेगी वैसे-वैसे ये सब अपने समाज एवं देश को आगे बढ़ने में सहयोग प्रदान करेंगे क्योंकि विद्यार्थी देश का भविष्य एवं राष्ट्र की पूंजी हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Scrivner, C. (2022). Curiosity: A Behavioral Biology Perspective. In press at the Oxford Handbook of Evolution and the Emotions (2022). Eds. Laith Al-Shawaf and Todd K. Shackelford.

अंजुम, एस. (2019). उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय, नैतिक निर्णय और धर्म निरपेक्ष अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा संकाय टांटिया वि० वि० राजस्थान

Jirout, J. and Zumbrunn, S. (2018). CURIOSITY IN SCHOOLS. University of Virginia.
https://www.researchgate.net/publication/329569586

दुराकू, जेड. एच. एंड होक्स्हा, एल. (2018). सेल्फ-एस्टीम, स्टडी स्किल्स, सेल्फ-कॉन्सेप्ट, सोशल सपोर्ट, साइकोलॉजिकल डिस्ट्रेस, एंड कोपिंग मैकेनिज्म इफेक्ट्स ऑन टेस्ट एंग्जायटी एंड अकेडमिक परफॉरमेंस, यूनिवर्सिटी ऑफ़ प्रिश्तीना, हसन प्रिश्तीना, रिपब्लिक ऑफ़ कोसोवो .

मेंदो-लाजरो, एस. एट.अल. (2017). सेल्फ-कॉन्सेप्ट इन चाइल्डहुडः द रोल ऑफ बॉडी इमेज एंड स्पोर्ट प्रक्टिस. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी. वॉल्यूमः 8(853).

पालोमिनो, एम.डी.सी.पी. (2017). एन एनालिसिस ऑफ सेल्फ-कॉन्सेप्ट इन स्टूडेंट्स विध कोम्पेंसेंटरी एजुकेशन नीड्स फॉर डेवलपिंग अ माइंडफुलनेस्स-बेस्ड साइकोएजुकेशनल प्रोग्राम. यूनिवर्सिडैड ऑफ जीन, स्पेन.

मेहरद,ए. (2016). मिनी लिटरेचर रिव्यु ऑफ सेल्फ-कांसेप्ट. फैकल्टी ऑफ साइकोलॉजी युनीवर्सीटेट औटोनोमा डी बर्सलोना, जर्नल ऑफ एजुकेशनल, हेल्थ एंड कम्युनिटी साइकोलॉजी वॉल्यूमः 5 (2).

पलासिओस, ई.जी. एट.अल. (2015). पर्सनल सेल्फ-कांसेप्ट एंड सेटिसफेक्सन विध लाइफ इन एडोलैसैंट्स, यूथ एंड एडल्टहुड. युनीवर्सिदाद देल पैस वास्को पसिकोठेमा, वॉल्यूमः 27 (1) 52-58.

Lukasz, D. K. at al. (2014). Subjective well-being as a mediator for curiosity and depression. Polish Psychological Bulletin, vol 45(2), 200-204.
DOI - 10.2478/ppb-2014-0025

Jirout, J. and Klahr, D. (2012). Children's scientific curiosity: In search of an operational definition of an elusive concept. Department of Psychology, Temple University, United States. www.elsevier.com/locate/dr

Pluck, G. (2011).Stimulating curiosity to enhance learning
Chulalongkorn University.

https://www.researchgate.net/publication/292088477

रामचन्द्रन, वी. (2003). गोटिंग चिल्ड्रन बैक टू स्कूल (प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में मामले के अध्ययन), सेज पब्लिकेषन्स, दिल्ली, 414.